''मेरे भावी एवं भावात्मक लक्ष्य''

- आचार्य कनकनन्दी

(मानवीय सीमा एवं समस्त बन्धन से परे मेरा लक्ष्य/(मैं चला))

(राग : सायोनारा..., है अपना दिल तो...)

मैं तो चला उस पार मैं चला...स्वार्थी मानव से परे मैं चला।
भेद-भाव के बन्धन तोड़ा...वैश्विक कुटुम्ब भाव में चला/(धरा)।।
काला-गोरा भेद-भाव परे मैं चला...धनी-गरीबों का बन्धन तोड़ा।
जाति-पंथ भेद-भाव परे मैं चला...जीव-जिनवर के भाव में जोड़ा।। (1)

परिवार-राष्ट्रवाद सीमा को तोड़ा...परस्पर उपग्रहो जीवों में जोड़ा।
मानव अधिकार कानून/(सीमा से) परे...सर्वजीव अधिकार भाव मैं धरा।।
ईर्ष्या द्वेष घृणा लोभ परे मैं चला...सत्य समता समन्वय में चला।
ख्याति पूजा लाभ से परे मैं चला...ज्ञान वैराग्य ध्यान में चला।। (2)

संकल्प/(प्रकल्प) विकल्प संक्लेश छोड़ा...स्मरण चिन्तन शान्ति में जोड़ा।
धन जन मान प्रतिष्ठा छोड़ा...शोध-बोध लेखन चर्चा में जोड़ा।।
वाद-विवाद व बुद्धि से परे...अनेकान्त व अनुभव में चला।
दीन-हीन अहंकार ममत्व परे...स्वाभिमान सोऽहंभाव तत्त्व में चला।। (3)

भौतिक वैभव पार मैं चला...आध्यात्मिक वैभव पाने मैं चला।
सीमित नाशवान वैभव छोड़ा...अक्षय अनन्त वैभव पाना।।
तन-मन से परे आत्मा में चला...गुणस्थान अतीत भाव में चला।
पुण्य-पापपरेमैंस्वयंकोमाना...'कनक'स्वयंकोआध्यात्म/(शुद्धात्मा)माना।।(4)

हल्दीघाटी, दिनांक 04.08.2013, रात्रि 10.52

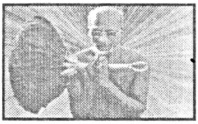

''वैश्विक एकता एवं सर्वोदय''

- आचार्य कनकनन्दी

(राग : तुम दिल की धड़कन...)

आओ मानव आओ हे विश्व ! विश्वकल्याण हेतु हमारे साथ।
संकीर्ण स्वार्थ भेद-भाव छोड़, उदार सहिष्णु भाव के साथ।। (1)

संगठन में है शक्ति निहित, विघटन में है नाश निहित/(निश्चित)।
प्रेम सहयोग में/(से) होता है संगठन, स्वार्थ विद्वेष में/(से) होता है विघटन।।(2)

चींटी दीमक से सीखो संगठन, वृक्ष बादल से सीखो विसर्जन।
रस्सी से/(में) होती रेशा की शक्ति, संगठन में है विकास शक्ति।। (3)

बिन्दु से सिन्धु होता निर्माण, अणु से ब्रह्माण्ड होता निर्माण।
परस्पर प्रेम सहयोग सहित/(युक्त), व्यक्ति सम्पूर्ण/(सकल) होता समाज।।(4)

विश्व मानव है एक समाज, मानव गति सम एक समाज।
औदारिक शरीर व त्रस पर्याय/(मनुष्य लोक), गति आयु कर्म एक समान।।(5)

जाति धर्म क्षेत्र सीमा सह भी, भाव से बनो हे ! उदार भावी !
मैत्री प्रमोद कारुण्य साम्य, जिससे मिटेंगे सभी वैषम्य।। (6)

हर देह के हर अंग भी, समान न होते हर दृष्टि से।
तथापि सहयोगी होते सभी हैं, तथाहि मानवों में समन्वय है।। (7)

प्रेम सहयोग व संगठन से/(में), द्वेष विद्रोह न होगा मानव से/(में)।
शान्ति सौहार्द्र व होगा सर्वोदय, कलह युद्धों का न होगा भय।। (8)

जिससे धन-जन समय साधन, दुरुपयोगी न होगा विज्ञान।
विकास में होंगे सभी विनिमय, ज्ञान-विज्ञान का होगा सर्वोदय।। (9)

प्रगति होगी सभ्यता संस्कृति, नीति सदाचार कला व विभूति /(सम्पत्ति)।
आत्मिक शान्ति मिलेगी सभी को, 'कनकनन्दी' का आशीष सभी को।। (10)

हल्दीघाटी, दिनांक 05.08.2013, रात्रि 9.28 तथा प्रातः 7.55

सर्वोदयी भारतीय संस्कृति

- आचार्य कनकनन्दी

(राग : चन्दा मामा दूर के...2, क्या मिलिये...)

आर्य संस्कृति सबसे प्यारी...जैन संस्कृति सबसे न्यारी...

प्रकृति रक्षण करने वाली...आत्मिक विकास करने वाली...(ध्रुव पद)...

यहाँ की धरती पावन वाली...षट् ऋतु (व) शस्य श्यामला वाली...

नदी पर्वत जंगल वाली... ह्रद समुद्र से सहित वाली...

तीर्थंकर बुद्ध जननी वाली...ऋषि-मुनि-आचार्य की प्रिय जननी...

ज्ञानी-विज्ञानी गणितज्ञ कवि...आयुर्वेद कलाज्ञ की आप जननी...

आपसे सभ्यता-संस्कृति जन्मी...अहिंसा समता शान्ति विस्तरी...

आध्यात्मिकता व मुक्ति प्रदायी...विश्व गुरुत्व की आप दातारी...

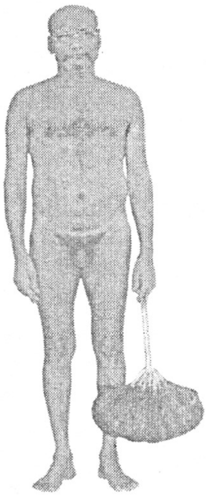

विश्व कुटुम्ब की शिक्षादात्री...वैश्विक शान्ति आप प्रदात्री...

अनेकान्त-स्याद्वाद शिक्षादात्री...आत्मिक शान्ति आप प्रदात्री...

भारतीय जन तुम्हें भूल गये (हैं)...भौतिक भोग में मस्त हो गये (हैं)...

जिससे अन्याय-पाप बढ़े (हैं)...शोषण भ्रष्टाचार रोग बढ़े (हैं)...

पाश्चात्य लोग तुम्हें मान रहे...शोध-बोध में आगे बढ़ रहे...

बहुविध विकास वे कर रहे...इण्डियन उनका फॉलो कर रहे...

भारतीय ! अभी तुम जाग जाओ...स्व-संस्कृति को शीघ्र अपनाओ...

सर्वोदय सुख तुम भी पाओ...'कनकनन्दी' के आशीष पाओ...

''आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के संक्षिप्त व्यक्तित्व-कृतित्व''

(आचार्यश्री ससंघ के नियम-कार्य)

1. आचार्यश्री कनकनन्दी जी तथा उनके शिष्यों के द्वारा अभी तक धर्म, दर्शन, विज्ञान, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सम्बन्धी शोधपूर्ण गद्य साहित्य प्रायः 225 तथा पद्य साहित्य प्रायः 25 का प्रकाशन विभिन्न भाषाओं में एवं अनेक संस्करणों में हो गया है तथा अभी भी गतिशील है।
2. भारत के 14 प्रदेशों के 57 विश्वविद्यालयों में शोध के लिए ''आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष'' की स्थापना तथा 14 प्रदेशों के शताधिक मन्दिर, लाइब्रेरी में साहित्य कक्षों की स्थापना एवं देश-विदेशों के विभिन्न धर्मावलम्बी विद्यार्थी से लेकर प्रोफेसर्स-वैज्ञानिकों के द्वारा शोध कार्य चालू है, यह शोधकार्य स्व-प्रोफेसर्स शिष्यों के द्वारा हो रहा है।
3. अभी तक 13 प्रदेशों में हजारों कक्षा, 32 शिविर, 11 वैज्ञानिक संगोष्ठी के माध्यम से विभिन्न धर्मों के लाखों विद्यार्थियों को पढ़ाना।
4. स्वसंघ (आचार्य कुन्थुसागर जी) तथा पर-संघ के प्रायः 250 आचार्य, उपाध्याय, साधु-साध्वी, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणि आदि को पढ़ाना।
5. विभिन्न धर्म के शताधिक विद्वान्, शिक्षक, लेक्चरार, डॉक्टर, प्रोफेसर्स, इंजीनियर, कुलपति, वैज्ञानिक, वकील, जज आदि को पढ़ाना तथा देश-विदेशों के शिष्य-भक्तों के द्वारा शोधकार्य, धर्मप्रचार, विश्वविद्यालयों से लेकर विश्वधर्म संसद तक होना।
6. ''जैन एकता एवं विश्वशान्ति'' के लिए देश-विदेशों में कार्य करना।
7. आध्यात्मिक-वैज्ञानिक उदारवादी धर्म द्वारा स्व-पर-विश्वकल्याण करना, भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना तथा सर्वोपरि सत्य की उपलब्धि करना अंतिम लक्ष्य है।

विशेष ध्यान योग्य : उपरोक्त समस्त कार्य आचार्यश्री कनकनन्दी के देश-विदेशों के विभिन्न धर्मावलम्बी भक्त-शिष्यों के द्वारा स्वेच्छा से तन-धन-मन-समय-श्रम के सहयोग से हो रहा है और आगे भी होगा। इसके लिए किसी भी प्रकार के चन्दा-चिठ्ठा, याचना-प्रलोभन-दबाव-बोली-व्यापारीकरण सर्वथा वर्जित है। आचार्यश्री तो उपर्युक्त कार्य के लिए अकिंचित्कर हैं (कर्त्ता नहीं हैं), केवल वे अपने शिष्य-भक्तों को पढ़ाते हैं, मार्गदर्शन देते हैं एवं आशीर्वाद देते हैं।

पुण्यार्जक

श्री प्रभात कुमार जैन सुपुत्र श्रीमती सुशीला जैन एवं श्री वीरसेन जैन (मुजफ्फरनगर) धर्मपत्नि श्रीमती वीणा जैन, पुत्री-पल्लवी जैन, दामाद-श्री संदीप जैन, पुत्र-निखिल जैन, पुत्रवधु-ऋतिका जैन, पौत्री-देवांशी जैन, दोहित्र-निर्भय जैन, अनुभूति जैन